

बैंगन

बुवाई का समय एवं उन्नत किस्म:

पहली फसल (शरद ऋतु फसल) की पौधशाला में बुवाई का समय: मई-जून, रोपाई का समय : जून से मध्य जुलाई

दूसरी फसल (बसंत ग्रीष्म फसल) की पौधशाला में बुवाई का समय: जनवरी में पॉली हाउस के अंदर, रोपाई का समय : फरवरी के मध्य

किस्म: बैंगन के फल को आकार के आधार पर तीन भागों में बांटा गया है।

- गोल आकार के फल की किस्में - पूसा उत्तम, पूसा उपकार, पूसा संकर-6 व पूसा संकर-9
- लम्बे आकार के फल की किस्में - पूसा कौशल, पूसा श्यामला, पूसा क्रांति, पूसा संकर-5 व पूसा संकर-20
- गोल व छोटे आकार के फल की किस्में - पूसा बिंदू व पूसा अंकुर।

फसल अन्तरण:

बैंगन की फसल में पौधे से पौधे की दूरी 60 से.मी. तथा पंक्ति से पंक्ति की दूरी 75 से.मी. रखनी चाहिए। कम बढ़वार वाली किस्मों के लिए पंक्ति से पंक्ति की दूरी 60 से 45 सें.मी. तथा पौध से पौध की दूरी 60 सें.मी. पर्याप्त है। पौध रोपाई का कार्य शाम के समय में करना चाहिए। रोपाई के तुरंत बाद सिंचाई करें।

बीज की मात्रा: उन्नत किस्मों का 400 ग्रा. तथा संकर किस्मों का 250-300 ग्राम बीज प्रति हेक्टेयर के हिसाब से पर्याप्त होता है।

पौधशाला तैयार करना

पौधशाला में बुवाई से पूर्व बीजों का उपचार फफूंदनाशक दवा (थीरम या कैप्टान) 2.5 ग्राम प्रति किलोग्राम बीज की दर से करें। पौधशाला उठी हुई क्यारियों में तैयार करना चाहिए। इन क्यारियों की लंबाई कम से कम 3 मीटर व चौड़ाई 0.6 मीटर रखनी चाहिए। बीजों की बुवाई पंक्तियों में करें तथा बुवाई की गहराई 1.5 से 2.0 सेमी. रखें। बीजों को बोने के बाद गोबर की खाद व मिट्टी के मिश्रण से ढक कर हल्की सिंचाई करनी चाहिये। यदि सम्भव हो तो क्यारियों को पुआल या सूखी घास से जमाव आने तक ढक कर रखना चाहिए, जिससे कि क्यारियों में नमी बनी रहती है तथा बीजों का एक समान जमाव होता है। 35 से 40 दिनों में पौध रोपाई योग्य हो जाती है।